रात्रीक्लास ओमशांति 23.11.67

बच्चे जानते हैं कि अभी हम कच्चे हैं ज्ञान और योग में। पक्के होंगे पिछाड़ी में। जब तक बड़ा इम्तिहान पास ना करें तो नीचे वाले कच्चे ही ठहरे। जब कर्मातीत अवस्था हो तब पक्के कहे जायें। नहीं तो सब कच्चे हैं। माला भी नम्बरवार 108 की बनती है। 8पक्के बाकी सब 100कहेंगे कच्चे नम्बरवार। कर्मातीत अवस्था पास आनर वो सिर्फ 8होते हैं। बाकी कच्चे कहते कितने कच्चे बन जाते हैं। पढ़ाई पूरी होगी तब रिजल्ट निकलेंगे। बहुत थोड़े बाकी कच्चे। कच्चे को .....क्षत्रिय कहा जाता है। सूर्यवंशी में भी पास ऑनर सिर्फ 8 होते हैं। बीच में एक है ,वो तो है एक पढ़ाने वाला टीचर। वो तो है ही पक्का। बड़े ते बड़ा टीचर कब भी कच्चा या पक्का नहीं बनता। तुम्हारी भी माला ऐसे बनती है। यह पुरानी बातें नहीं हैं। ऐसे नहीं कि रुद्रमाला को लाखों वर्ष हुए हैं। कहेंगे कि 5000वर्ष हुए हैं। रुद्रमाला भी बनी हुई है। आदि,मध्य और अंत को तुम बच्चे ही जानते हो। नया कोई समझ ना सके। अगर सुनाया जाये कि आदि को सतयुग कहा जाता है। अब कलियुग है। अभी संगमयुग है अर्थात् पुरुषोत्तम युग आता है। कनिष्ट पुरुषों का पास हो गया। अभी तुम कहेंगे संगमयुग। तुम पावन बन रहे हो। जन्म जन्मांतर के जो पाप चढ़े हैं योगबल से वह कटते जायें तब कर्मातीत अवस्था को पहुंचेंगे। यहां बच्चों को सहज सबक मिलता है। बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। याद करने में ही मेहनत लगती है। तमोप्रधान बनने में टाइम लगता है। बच्चों को सिखलाया जाता है कि कोई भी कर्म करते हुए बुद्धि का योग बाप के साथ हो। बाप इस समय स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वहां आत्माएं पवित्र चाहिए। यहां तो पतित हैं। अजामिल जैसी पापआत्माओं का भी उद्धार हो जाता है। इस समय सब तमोप्रधान हैं। अपने को श्री2 108जगतगुरू कहलाते हैं। यह सबसे तमोप्रधान है। अपना पार्ट बजाय रहे हैं। यह भी इन्हों को पता नहीं है कि हम सब पार्टधारी हैं। यह बेहद का ड्रामा है। इसमें सभी एक्टर्स को जानना (असम्भव) है। बुद्धि समझती है कि सब एक्टर्स हैं। हर एक को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। आत्माएं पार्ट बजाती रहती हैं। शरीर द्वारा भी किसको पता नहीं। कई बहुत बच्चे समझते हैं कि आप हमारे अंदर को जानते हैं। बाप कहते हैं कि नहीं, मैं किसको भी कुछ भी नहीं बता सकता। मैं इस काम के लिए नहीं आया हूं। ऐसे नहीं कि बाबा जानी जाननहार है। हम विकारी हैं। बाबा जानते होंगे। बाप कहते हैं कि मेरा इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। तुमको समझाया है कि पवित्र बनना है। कहते भी हैं कि हम पतित तमोप्रधान हैं। पुकारते भी हैं कि हे पतित–पावन आवो और आकर रास्ता बताओ। ....होता है ना। मूंझ पड़ते हैं। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में कहते हैं कि अनेक रास्ते हैं। यह सब रास्ते भगवान पास जाने के हैं। बाप कहते हैं कि नहीं। भक्तिमार्ग को दुर्गतिमार्ग कहा जाता है। तुम पतित बन जाते हो। जैसे दुबन होते हैं बड़े। इस दुबन बेड़ी से निकलना है। समझाया जाता है कि बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यहां सिर्फ एक ही बात समझाई जाती है कि आत्मा पतित बनी है। बाप को बुलाते ही हैं कि हे पतित–पावन आकर हमको पावन दुनियां का रास्ता बताओ। जब तक बाप ना आवे तब तक रास्ता निकाल नहीं सकते। बाप आते ही इसी समय हैं। ड्रामा में पहले से ही नूंध है। जैसे बायस्कोप शूट किया हुआ है फिर रिपीट करता है ना। वो है दो घंटे का। यह है 5000वर्ष का। याद तो नहीं रहता है। बुलाते हैं तो पता होना चाहिए ना। टाइम कितना लगता है जो ...पावन से पतित बन पड़ते हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। सेकेंड की बात सुनाने लिए कितने चित्र आदि बनाने पड़ते हैं। याद की यात्रा ही मुख्य है। वो ही मुख्य है और डिफिकल्ट भी है। घड़ी2 भूल जाते हैं। समझेंगे वो जो पिछाड़ी में याद करते2 पास ऑनर होते हैं। माया पर जीत पाने की वीरता दिखलाते हैं। समझाया जाता है ड्रामाप्लैनअनुसार हर एक पुरुषार्थ करने में बांधा हुआ है। जो पुरुषार्थ करेंगे सो ब्राह्मण बनने वाले होंगे। ओम का अर्थ, हम सो का अर्थ भी बताया है। मुरली कब भी मिस ना करनी चाहिए। वो जैसे एपसेंट पड़ जाती है। यह तो बहुत बड़ी गॉडली यूनिवर्सिटी है। इसमें मिस ना होना चाहिए। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।